M.A. Semester- III
Philosophy CC- 10
Unit - III

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Nature of sense data according to Moore

(Part - II)

Sense data का मन के साथ सम्बन्ध –

Moore का विचार है कि sense data का हमारे मन के साथ एक ऐसा सम्बन्ध है जैसा सम्बन्ध भौतिक वस्तुओं का मन के साथ नहीं है sense data साक्षात् प्रत्यक्ष का विषय है। अपने एक लेख "The Status of sense data" में sense data के इस पक्ष की चर्चा Moore ने की है जब हमें बाह्य जगत के विषय में कोई ज्ञान हासिल करना होता है तब हमें अपनी ज्ञानेन्द्रियों का व्यवहार इसके लिए करना होता है और ज्ञानेन्द्रियाँ जिस वस्तु का अपिलम्ब ज्ञान हासिल करती है, वह वस्तु साक्षात् रूप से बोध होने के योग्य है। इसी अविलम्ब ज्ञातव्य वस्तु को sense datum के नाम से पुकारा जाता है प्रश्न यह है कि इस तरह से अपिलम्ब देखी गयी वस्तु का जिसे sense datum कहकर पुकारा जाता है, क्या हमारे मन पर आधारित है? क्या इनका हमसे स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है? हम यह कैसे कह सकते हैं कि बर्कले का विचार गलत है। Moore ने एक बाह्य भौतिक जगत् को स्वीकारा है और यह भी दावा किया है कि इसका अस्तित्व हमसे स्वतन्त्र है और इस तरह

वे बर्कले का विरोध करते हैं। उनका तर्क है कि संवेदनाएँ वस्तुओं से भिन्न हैं। किसी वस्तु के रंग का प्रत्यक्ष उस वस्तु से भिन्न है अर्थात हमारी अनुभूति एक वस्तु है और जिस वस्तु की अनुभूति हमें हो रही है, वह दूसरी वस्तु है। उनके लिए sense data हमारे मन से सम्बन्धित है, लेकिन वे हमारे मन पर आधारित नहीं है। Moore का मत है कि sense data अस्तित्ववान होता है चाहे उसकी अनुभूति हमें हो या नहीं हो।

<u>sense data का भौतिक वस्तुओं के साथ सम्बन्ध</u>

sense data का भौतिक वस्तुओं से सम्बन्ध होने की कई सम्भावनाएं हैं—

(1) भौतिक वस्तुओं का अस्तित्व नहीं है और इसलिए इस तरह के सम्बन्ध की समस्या नहीं उठती।

(2) sense data ही वस्तु है और इसलिए भी कोई समस्या नहीं उठती।

(3) sense data भौतिक वस्तुओं के सतह का भाग है।

(4) sense data का सम्बन्ध भौतिक वस्तुओं के साथ कुछ ऐसा है जिसे हम नहीं जानते।

Moore पहली सम्भावना को नहीं स्वीकारता। उनके अनुसार भौतिक वस्तुओं का अस्तित्व है। वस्तुएं मानसिक नहीं होती। दूसरी सम्भावना को भी उन्होंने नहीं स्वीकारा है, क्योंकि — जब हम किसी वस्तु को देखते हैं, उदाहरण के लिए — अपना हाथ, तब हम यह पाते हैं कि हमारे हाथ में ऐसी वस्तुएँ हैं जो कि हाथ के sense datum में नहीं हैं। उदाहरण के लिए sense datum की रचना हड्डी, चमड़ा तथा खून से नहीं होता जबकि

ह्यूम की रचना में ये चीजें आवश्यक है। अतः sense-datum कोई वस्तु नहीं होती। Moore ने तीसरी सम्भावना को स्वीकार्य है और इसे सत्य कहा है अर्थात् इनके अनुसार sense datum वस्तु की सतह का एक भाग है।

Critical Comments — Moore के sense datum विचार की कुछ आलोचनाएँ भी हुई है। सर्वप्रथम आलोचकों का कहना है कि इस विचार से यह स्पष्ट होता है कि भौतिक वस्तुओं का हमें साक्षात् ज्ञान नहीं होता। ऐसी स्थिति में sense datum और वस्तु के बीच सम्बन्ध की व्याख्या कैसे की जाती है? इस सम्बन्ध में Hume द्वारा दिये गये तर्क की चर्चा की है और उस तर्क को काटने की कोशिश भी की है। Hume तीन नियमों की बात करता है और वे हैं-

(1) यदि आप साक्षात् रूप से किसी वस्तु से परिचित नहीं होते तब आप यह नहीं जान सकते कि यह अस्तित्ववान है, बशर्ते की आप यह जानें कि आपका परिचय उस वस्तु के किसी चिन्ह या प्रतीक से है।

(2) आप तब तक किसी वस्तु को दूसरे वस्तु का चिन्ह या प्रतीक नहीं कह सकते जबतक कि चिन्ह और वस्तु के बीच जो सम्बन्ध है उसका ज्ञान हो।

(3) चिन्ह और वस्तु के बीच सम्बन्ध का ज्ञान आपको तब तक नहीं हो सकता जबतक कि आपका परिचय इन दोनों से नहीं हो। अब यदि Hume के ये नियम सत्य है तब भौतिक वस्तुओं का अस्तित्व नहीं स्वीकारा जा सकता क्योंकि इनका हमें परिचय नहीं होगा। Moore यह कहते हैं कि हम केवल sense data का ही

साक्षात् परिचय कर सकते हैं। Sense data को भौतिक वस्तुओं का चिन्ह भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि Sense data और भौतिक वस्तु के बीच के सम्बन्ध का हमें ज्ञान नहीं होता। ऐसी स्थिति में Moore का यह दावा कि भौतिक वस्तुओं का ज्ञान हमें होता है, संगत प्रतीत नहीं होता। Moore ने Hume द्वारा दिए गये तर्क को खण्डित करने का प्रयास किया, लेकिन उनके तर्क Hume के विचार को खण्डित नहीं कर पाये।

इस प्रकार हम देखते हैं कि Moore के विचार में (Sense data) जैसी समस्या का सम्बन्ध प्रत्यक्ष से है। Sense data का हमें साक्षात् परिचय होता है जो हमारे मन से स्वतन्त्र है तथा खुद वस्तु की सतह का एक अंश है न कि सम्पूर्ण वस्तु।